वर्षायोग २०२२ के पावन अवसर पर प्रकाशित

पुण्योदय अतिशय क्षेत्र शिरसाड

पूजन

वालीसा

समाधिसम्राट

आरती

भजन

श्री वासुपूज्य सागरजी महाराज नमः

रचना

आचार्य श्री १०८ श्रेयसागरजी महाराज

शिष्य : ८४ लाख मंत्र लेखनकर्ता समाधिसम्राट
आचार्य १०८ श्री वासुपूज्य सागरजी महाराज

आचार्य श्री श्रेय सागरजी महाराज द्वारा रचित

सचित्र चौका पुराण ग्रंथ एवं भोजन चालीसा ग्रंथ

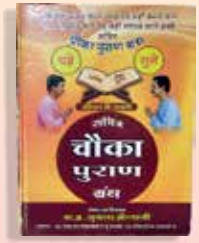

पढ़ें
सुनें
जीवन में
उतारे

आचार्य श्री ससंघ

पुण्योदय अतिशय क्षेत्र शिरसाड, मुम्बई

स्थापना

तर्ज - (अनादिकाल से जग मे.....)

पुण्योदय की पुण्यधरा का, दर्शनकर मन हर्षाया,
अष्ट द्रव्य का थाल सजा, में पूजन करने आया ।
आह्वानन् स्थापन सन्निधिकरण मन भाया,
पुण्योदय के पारस बाबा मेरे मन मे समाया ।।

- ॐ ह्रीं श्री पुण्योदय अतिशय क्षैत्र शिरसाड श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय
  अत्र अवतर - अवतर संवौषट् आह्वानन
- ॐ ह्रीं श्री पुण्योदय अतिशय क्षैत्र शिरसाड श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय
  अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
- ॐ ह्रीं श्री पुण्योदय अतिशय क्षैत्र शिरसाड श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय
  अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्

जल

अतिशयकारी पार्श्वप्रभु की, मूरत मन में बिठाये
जन्मजरा के नाश करन हम, प्रासुक जल को चढ़ाये
तीर्थक्षैत्र शिरसाड पुण्योदय, मेरे मन को भाये
इस तीरथ की पूजन करने, मिलकर हम तो आये

ॐ ह्रीं श्री पुण्योदय शिरसाड अतिशय क्षेत्रे
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्व. स्वाहा

चन्दन

अश्वसेन वामा के लाल ये, पार्श्वप्रभु कहलाये
संसार ताप के नाश करन, चन्दन प्रभु चरण चढाये
तीर्थक्षैत्र शिरसाड पुण्योदय, मेरे मन को भाये
इस तीरथ की पूजन करने, मिलकर हम तो आये

ॐ ह्रीं श्री पुण्योदय शिरसाड अतिशय क्षेत्रे
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चन्दन निर्व. स्वाहा

अक्षत

बैरी कमठी हार गया, उपसर्ग विजेता कहलाये
अक्षय पद की प्राप्ति करन को, अक्षत हम तो चढाये
तीर्थक्षैत्र शिरसाड पुण्योदय, मेरे मन को भाये
इस तीरथ की पूजन करने, मिलकर हम तो आये

ॐ ह्रीं श्री पुण्योदय शिरसाड अतिशय क्षेत्रे
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्व. स्वाहा

पुष्प

ओला शोला पत्थर बरसे, तनीक नही घबराये
कामबाण के नाश करन को, खिले कमल चढाये
तीर्थक्षैत्र शिरसाड पुण्योदय, मेरे मन को भाये
इस तीरथ की पूजन करने, मिलकर हम तो आये

ॐ ह्रीं श्री पुण्योदय शिरसाड अतिशय क्षेत्रे
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा

नैवेद्य

नवफणो के धारी प्रभुवर, मणिमय चमचम चमकाये
क्षुधा रोग के नाश करन, नैवेद्य चढाने लाये
तीर्थक्षैत्र शिरसाड पुण्योदय, मेरे मन को भाये
इस तीरथ की पूजन करने, मिलकर हम तो आये

ॐ ह्रीं श्री पुण्योदय शिरसाड अतिशय क्षेत्रे
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्य निर्व. स्वाहा

दीप

कमलासन पे प्रभु विराजे, प्रातिहार्य अठ मन भाये
मोहान्धकार के नाश करन, आरती दीपक से कराये
तीर्थक्षैत्र शिरसाड पुण्योदय, मेरे मन को भाये
इस तीरथ की पूजन करने, मिलकर हम तो आये

ॐ ह्रीं श्री पुण्योदय शिरसाड अतिशय क्षेत्रे
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्व. स्वाहा

धुप

शतवर्षो की आयु धारी, पद्मासन ये मन भाये
अष्टकर्म के नाश करन को, धुप सुगन्धि चढाये
तीर्थक्षैत्र शिरसाड पुण्योदय, मेरे मन को भाये
इस तीरथ की पूजन करने, मिलकर हम तो आये

ॐ ह्रीं श्री पुण्योदय शिरसाड अतिशय क्षेत्रे
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय धुपं निर्व. स्वाहा

फल

नव हाथ तन ऊँचा पाये, मंगल आठ बताये
महा मोक्ष फल पाने को, हम सेव संतरा लाये
तीर्थक्षैत्र शिरसाड पुण्योदय, मेरे मन को भाये
इस तीरथ की पूजन करने, मिलकर हम तो आये

ॐ ह्रीं श्री पुण्योदय शिरसाड अतिशय क्षेत्रे
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्व. स्वाहा

अर्घ

तीन लोक के नाथ आप हो, हरित वर्ण है पाये
पद अनर्घ के पाने को हम, अर्घ सजाकर लाये
तीर्थक्षैत्र शिरसाड पुण्योदय, मेरे मन को भाये
इस तीरथ की पूजन करने, मिलकर हम तो आये

ॐ ह्रीं श्री पुण्योदय शिरसाड अतिशय क्षेत्रे
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्व. स्वाहा

जाप्य

ॐ ह्रीं श्री पुण्योदय अतिशय क्षेत्रे श्री पार्श्वनाथाय नमः
९, २७ या १०८ बार

जयमाला

दोहा - अष्टद्रव्य संघ अर्घ चढा के, मन में भाव जगाया
क्षेत्र पुण्योदय पार्श्वनाथ की, जयमाला मे रचाया

तर्ज
(भगवान मेरी नैय्या उस पार लगा.....)

हे पार्श्व प्रभु तेरे, दर पे हम आये है
पूजन की जयमाला में, गुण तेरे गाये है
तुम उँची वेदी पे, पदमासन धारे है
पारस बाबा मेरे, ये कितने प्यारे है

मूरत एसी लगती, जैसे मुझ को निहारे ये
है सोम्य दृष्टि इनकी, भव भव से तिराये ये
काशी में जन्मे हो, तुम बाल ब्रह्मचारी
भव पार लगा देना, ये विनती हमारी

पारस बाबा तुम तो दयालु प्रभुवर हो
पुण्योदय के पारस कृपालु प्रभुवर हो
वामा माता के हो, तुम प्यारे प्यारे लाल
तेरे दर्शन करने से हो जाये माला माल

पितु अश्वसेन के पारस, प्रभु राज दुलारे हो
भक्तों के दिल को जीतने, वाले मन हारे हो
तीरथ ये चमत्कारी, आती जनता सारी
मन में चिन्तन करलो, मिट जाये रोग भारी

तुम देवो के हो देव, सुर असुर करे तेरी सेव
णमोकार मंत्र के जपने से युगल बना वो देव
पद्मावती बनी आसन, धरणेन्द्र बने थे छत्र
उपसर्ग कमठ का बना, चर्चा का विषय सर्वत्र

धरणेन्द्र और पदमावती तेरे भक्त पुराने है
प्रभु तुम को छोड के और किसी को नही जाने है

पारस बाबा के समान, कोई और नही है धनी
पुण्योदय तीरथ में, पूजन को भीड घनी
प्रभु तेरे दर पे नित, घण्टा झालर वाजे
जयमाला मे रस भरे, फल लाये हम ताजे

ॐ ह्रीं श्री पुण्योदय शिरसाड अतिशय क्षेत्रे
श्री पार्श्वनाथाय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामिती स्वाहा

पूर्ण हुई जयमालीका, पार्श्वनाथ भगवान
बॉम्बे नगरी मे पुण्योदय की है बडी ही शान
पूजन और जयमाला से प्रभु, तेरा किया गुणगान
हे प्रभु शक्ति मुझ मे भरना, तेरा लगाऊ ध्यान
(पुष्पाञ्जली)

पुण्योदय अतिशय क्षेत्र शिरसाड

चालीसा

पुण्योदय

चालीसा

मुंबई नगरी के अति निकट
तीर्थ क्षेत्र शिरसाड बना है।।१।।
नाम है पुण्योदय निराला
जंगल चारो ओर घना है।।२।।
जैन तीर्थ बन जाये अच्छा
कहे बोम्बे का बच्चा बच्चा।।३।।
तीर्थ है पुण्योदय के लिए
काम करेंगे हम सब अच्छा।।४।।
अभी क्षेत्र है छोटा बच्चा
तुम बन जाओ इसके जच्चा।।५।।
ये दरबार है पारस प्रभु का
दान निकालो अपना सच्चा।।६।।

दिया दान आगे फल पाये
यही काम हम सबके आये।।७।।
पुण्योदय तीरथ में आकर
घर के उत्सव यही मनाये।।८।।
धर्मशाला निर्माण हुआ है
भक्तों की यहा बडी दुआ है।।९।।
कमी नही यहा पानी की
बहोत बडा यहा एक कुआ है।।१०।।
आरती शाम सवेरे होती
नवन करने पहने धोती।।११।।
पारस प्रभु का नवन जो करले
उनके घर मे बरसे मोती।।१२।।
पुण्योदय तीरथ है भारी
आते है यहा नर और नारी।।१३।।
चौमासा हर साल होता है
लगे मेला व्रतीयो का भारी ।।१४।।

पुण्योदय

पारस बाबा के दर्शन से
मिटती है सब हारी बिमारी ।।१५।।
पुण्योदय में पारस प्रभु की
मूरत लगती है बडी प्यारी ।।१६।।
ध्यान करो तीरथ पे आकर
मन ना लगे फिर घर पर जाकर ।।१७।।
एक बार नही बार बार यहा
ध्यान लगालो मन भर भर कर ।।१८।।
हरियाली का देखो नजारा
कोयल पक्षी बोले प्यारा ।।१९।।
क्षैत्र अतिशय पुण्योदय है
बोम्बे नगरी का है सहारा ।।२०।।
पाच है मानस्तम्भ मंदिर के
आंगन मे ये शोभा देते ।।२१।।
उनके दर्शन करके हम तो
मन मे अति आनन्द है पाते ।।२२।।

चालीसा

पुण्योदय

दूर दूर से यात्री आते
तीरथ के दर्शन है पाते ।।२३।।
रोग शोक भय नाम प्रभु का
लेते ही सब ये भाग जाते।।२४।।
एक सहारा अपना प्यारा
पुण्योदय है तीर्थ हमारा ।।२५।।
हम सब की आखो का तारा
जुडे बोम्बे का कोना सारा ।।२६।।
पार्श्व प्रभु के पीछे दोनो
भामण्डल लागे मनहारी ।।२७।।
तीन छत्र सिर पे शोभे
श्री पार्श्वप्रभु की महिमा भारी ।।२८।।
तीर्थ क्षैत्र का हो विकास
हम सब की है बस यही आश ।।२९।।
पुण्योदय की चर्चा करना
अपने घर के आस पास ।।३०।।

चालीसा

इस तीरथ पर जो भी आता
शान्ति अपने मन मे पाता।।३१।।
ऐसे शान्ति प्रिय तीरथ में
जोडले तू भी अपना नाता ।।३२।।
पुण्योदय की माटी लेकर
जो भी अपने शिश लगाये ।।३३।।
मन मे घुम रही बैचेनी
क्षण भर में उसकी भग जाये ।।३४।।
मंदिर के आंगन मे देखो
ध्वझा केशरी शोभा पाती ।।३५।।
लहर लहर और फहर फहर कर
गीत वो पुण्योदय के गाती ।।३६।।
खाना पीना सोना रहना
जो चाहो तुम और भी कहना ।।३७।।
इन्तजाम है पुण्योदय पर
ये बोम्बे नगरी का गहना ।।३८।।

वासुपुज्य के शिष्य कहाये, श्रेय सागर पुण्योदय आये ।।३९।।
पार्श्व प्रभु के चमत्कार से, प्रभु पूजा चालीसा रचाये ।।४०।।

(इति पुण्योदय चालीसा)

दोहा

गुरु पुण्य सागरजी का आशिष, क्षेत्र मे रंग ये लाया
सारी कमेटी जैन समाज का, योग दान है पाया
तीर्थ क्षैत्र की सेवा में ये, लगा दिया तन मन और धन
आत्मतीर्थ की सेवा में प्रभु, लग जाये अब मेरा मन

(पुष्पांञ्जली)

आचार्य श्री द्वारा रचित ब्रह्मचर्य अवस्था में

श्रावक चालीसा

शतक विंशति

ऑडियो सी.डी. सुने

समय ३ घंटे

पढ़ें सुने - जीवन में उतारें

हमारी वेबसाईट है

www.vasupujyasagarji.com

इंटरनेट देखें, यूट्यूब क्लिक करें

(आरती)

पुण्योदय अतिशय क्षैत्र शिरसाड (विरार - मुंबई)

तर्ज - (इह विधि मंगल आरती.....)

पुण्योदय शिरसाड क्षेत्र की
मै तो जगमग आरती उतारु
आरती उतारु प्रभु गुण तेरे गाऊ,
पुण्योदय शिरसाड....

पंचकल्याण के प्रभु धारी
भामण्डल प्रभु के पीछवारी
पुण्योदय शिरसाड....

तीन छत्र शिर शोभा देते
चंवर को हाथो में लेके
पुण्योदय शिरसाड....

पार्श्वनाथजी अतिशय कारी
नवफण के प्रभु तुम हो धारी
पुण्योदय शिरसाड....

पुण्योदय तो पुण्य जगाये
हाथो मे आरती ले आये
पुण्योदय शिरसाड....

भजन

तर्ज - (जहा डाल डाल पर सोने....)

मायानगरी बोम्बे के निकट मे तीर्थ क्षेत्र है प्यारा
पुण्योदय तीर्थ हमारा, शिरसाड क्षेत्र है हमारा
जहा बरसे पारस बाबा की कृपा दृष्टी का नजारा,
इस तीर्थ को नमन हमारा

(अन्तरा)

पुण्योदय तीरथ की महिमा, सारे जग मे बताये-२
पार्श्वनाथ की भक्ति का, गुणगान यहा पर गाये-२
तीर्थो मे भी तीरथ महान, यहा उमडा जन जन सारा
पुण्योदय तीर्थ....

आकुलता मन छा जाती, तब याद करो प्रभुवर को-२
नाम प्रभु का जप करके, खुशीयो से भर दो घर को
हर घर घर मे खुशीया छाये, खुशहाल बने जग सारा
पुण्योदय तीर्थ....

मंदिर के शिखर पर ध्वजा लहरे देखो फर फर
पुण्योदय शिरसाड तीर्थ की चर्चा होती घर घर
इस तीर्थ मे पूर्ण सहयोग दिया तो जैन समाज हमारा
पुण्योदय तीर्थ....

भजन

तर्ज - (ॐ जपा करो.....हर हर देवा जपा करो)

आया करो सब आया करो, पुण्योदय मे आया करो
पुण्योदय मे आकर के प्रभु पारस गुण को गाया करो
(अन्तरा)
शान्ति प्रदाता सब सुख दाता ज्ञानामृत को दिया करो
ज्ञानामृत को दिया करो, अज्ञान मेरा दूर किया करो
आया करो...
मुम्बई नगरी के अतिनिकट, समय समय पे आया करो
समय समय पे आया करो, दर्शन प्रभु के पाया करो
आया करो...
तीर्थ क्षैत्र मे आकर भाई, आतम ध्यान लगाया करो
आतम ध्यान लगाया करो, पुण्य की गगरी भरा करो
आया करो...
तीर्थ क्षेत्र मे आया करो, गुरुवर के दर्शन किया करो
गुरुवर के दर्शन पाया करो, गुरुवर के जैसा बना करो
आया करो...
उत्तम मौका मिला है हाथो से मत इसको गवाया करो
मानव जन्म मिला है अनमोल, तप संयम से सजाया करो
आया करो...

आरती

मैं तो आरती उतारु रे - पुण्योदय तीरथ की
मैं तो आरती उतारु रे - पारस बाबा की
जय जय पुण्योदय तीरथ जय जय हो
जय जय पारस बाबा जय जय हो

(अन्तरा)

बडी भक्ति से दीप जलाऊ - प्रभु तेरे चरणों मे- २
जग मग जग ज्योति जले - प्रभु तेरे चरणों मे- २
भक्ति करु झूम झूम, पुण्योदय मे धूम धूम - २
देखो मची है आज, मैं तो आरती उतारु रे पारस
जय जय पुण्योदय तीरथ...

बाबा पारस का देखो यहा, अतिशय भारी है
बाबा पारस पुण्योदय के, अतिशय कारी है
चरणो मे शिश धरु, पापो से मे डरु- २
आरती उतारु आज, मैं तो आरती उतारु रे पारस
जय जय पुण्योदय तीरथ...

पुण्योदय के पारस प्रभु जी अरजी सुन लेना
भक्त आया है तेरे द्वार - शरण तू दे देना
पुण्य बढे - पाप घटे, कषाये जीवन से हटे
भावना ये भाऊ मैं, मैं तो आरती उतारु रे पारस

(इति पुण्योदय क्षेत्र आरती)

आधुनीक धर्मशाला - पुण्योदय क्षेत्र शिरसाड-मुंबई

मुख्य निर्देशिका

मीना राकेश जैन - 74980 76421

राकेश शाह - 93242 63121

पुण्योदय अतिशय क्षेत्र शिरसाड, मुम्बई

महावीर धाम के पास, नेशनल हायवे नं. ८ शिरसाड, विरार (पूर्व), मंबई